साक्षात्कार

पुस्तकालय
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की

अंजू चौधरी, वरिष्ठ शोध सहायक,
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की।

आदमी - भगवान मुझे बताइये जीवन इतना कठिन क्यों है ?

भगवान - जीवन को जिओ विश्लेषण करना छोड़ दो। विश्लेषण ही जीवन को जटिल बनाता है।

आदमी - हम सब क्यों नाखुश हैं ?

भगवान - तुम्हारा कल आज है परन्तु तुम कल की चिन्ता करते हो। तुम चिन्तित हो क्योंकि तुम विश्लेषण करते हो। चिन्ता करना तुम्हारा स्वभाव हो गया है। इसी कारण तुम अप्रसन्न हो, और तुम भूल गये हो कि मैं भी हूँ - तुम्हारा परम मित्र।

आदमी - परन्तु हम कैसे चिन्तित ना हो जबकि वहाँ पर अनेक अनिश्चितताएं हैं और मैं तुम्हें कभी-कभी याद भी रखता हूँ।

भगवान - अनिश्चितताओं को हटाया नहीं जा सकता परन्तु चिन्ता को तो मिटाया जा सकता है। अतः जब तुम मुझे याद करते हो मैं तुम तक आता हूँ।

आदमी - लेकिन अनिश्चतताओं के कारण बहुत दुःख हैं।

भगवान - दुःख तो अनिवार्य हैं परन्तु कष्ट तुम्हारा चुनाव है।

आदमी - क्या दुःख हमारा चुना है ? क्यों अच्छे व्यक्ति ही सदा दुःख उठाते है

भगवान - हीरा कभी भी घर्षण के बिना नहीं चमकता। सोना आग की तपन के बिना शुद्ध नहीं होता। अच्छे व्यक्तियों का ही इम्तहान लिया जाता है। परन्तु दुःखी मत होवो। इन अनुभवों से जीवन को उत्तम बनाओं कड़वा नहीं।

आदमी - क्या मतलब क्या ये अनुभव लाभदायक हैं ?

भगवान - हाँ, प्रत्येक अनुभव एक शिक्षक है। वह पहले शिक्षा देता है फिर परीक्षा लेता है।

आदमी - परन्तु क्यों हमें इन परीक्षाओं से गुजरना चाहिए ? हम क्यों समस्याओं से मुक्त नहीं हो सकते ?

भगवान - समस्याएं रास्ते अर्थपूर्ण पत्थर हैं जो लाभप्रद शिक्षा देते हैं। जिससे हमारी मानसिक क्षमता में वृद्धि होती है। हमारी आन्तरिक क्षमता हमारे जुझारू होने से ही आती है न कि समस्या मुक्त होने से। और ये सब समस्याएं तुम्हारे द्वारा बनाई गइ हैं।

आदमी: बहुत सारी समस्याओं के बीच हम नहीं जानते कि ये हमारे द्वारा बनाई गई है? आप कैसे कह सकते हो कि ये हमारे द्वारा बनाई गई है।

भगवान: जब तुम बाहर से देखते हो तो तुम्हे इसका ज्ञान नहीं होता। अन्दर झाँक कर देखो। जब तुम अन्दर झाँकोगे तो तुम जाग्रत होंगे। क्योंकि आँखे सदा दृश्य दिखाती है परन्तु हृदय सदा आन्तरिक सम्पदा का ज्ञान कराता है। हालाँकि जब तुम अन्दर देखोगे तुम हम बहार भी देखने में सक्षम होंगे। क्या तुमने कर्म के बारे में नहीं सुना।

आदमी - ओह अब मैं समझ गया परन्तु कभी-कभी मैं सही दिशा का ज्ञान नहीं कर पाता। मुझे क्या करना चाहिए?

भगवान - सफलता दूसरे सुनिश्चित करते हैं जबकि संतुष्टि तुम्हारे द्वारा आती है। मार्ग का ज्ञान होना संतुष्टि है। तुम चुम्बक जो मार्ग दिखाती है उसी के साथ् कार्य करो। औरों को धुरी के साथ कार्य करने दो तुम्हारे पास बहुत कर्म है और उत्पन्न मत करो तुम बस मुझ पर निर्भर रहने की कला सीखो।

आदमी - कठिन समय में हम कैसे निर्भर रह सकते हैं ?

भगवान - सदा देखो कि तुम कितना दूर आ गये हो न कि कितना दूर जाना बचा है। सदा आशीवार्दों को गिनों उन्हें नहीं जो तुम्हें मिल न सका। मैने सदा तुम्हें इतना अधिक दिया है जो तुम्हारे पास नहीं है उससे भारी है।

आदमी - मानवता के लिए क्या आश्चर्यजनक है ?

भगवान - जब वे दुःख उठाते हैं तो पूछते हैं कि मैं ही क्यों? परन्तु जब वे समृद्ध होते हैं तो कभी नहीं पूछते कि मैं ही क्यों ? प्रत्येक व्यक्ति में उसका सत्य निहित है। परन्तु कुछ ही इसे जानने के उत्सुक होते हैं।

आदमी - कभी-कभी मैं पूछता हूं कि मैं कौन हँ क्यों यहाँ आया हूँ परन्तु मुझे उत्तर नहीं मिलता।

भगवान - ढूँढो कि तुम कौन हो और ये भी ज्ञात करो कि तुम क्या होना चाहते हो। और देखो तुम्हारे आने का क्या उद्देश्य है ? जीवन एक खोज की प्रक्रिया नहीं है परन्तु यह एक होने की प्रक्रिया है।

आदमी - मैं जीवन से क्या अच्छा पा सकता हूँ ?

भगवान - अपने बीते कल को बिना नकारात्मक भाव के देखो। अपने आज को आत्मविश्वास से जीओ। अपने भविष्य को बिना डर के जिओ। मेरा सहारा लो और अपने को मुझ पर छोड़ दो। अपने कर्तव्यों को मुझे याद करते हुए पूरा करो।

आदमी - एक अन्तिम प्रश्न। कभी-कभी मैं महसूस करता हूँ कि मेरी प्रार्थना का उत्तर नहीं मिला।

भगवान - प्रार्थना कभी भी निरर्थक नहीं जाती। उस समय भी नहीं जब उत्तर नहीं है।

आदमी - इस आश्चर्यजनक बातचीत के लिए धन्यवाद।

***